सन्निभानि=प्रज्वलित; **दिशः**=दिशाओं को; **न**=नहीं; **जाने**=जानता; **न**=नहीं; **लभे**=प्राप्त होता; **च**=तथा; **शर्म**=सुख को; **प्रसीद**=(आप) प्रसन्न हों; **देवेश**=हे देवाधिदेव; **जगन्निवास**=हे जगत् के आश्रय।

अनुवाद

हे देवाधिदेव! हे जगन्निवास! आपके विकराल दाँतों वाले प्रलयकाल की अग्नि के समान प्रज्वलित मुखों को देखकर मैं सुख को प्राप्त नहीं होता हूँ। सब दिशाओं से मुझे मोह की ही प्राप्ति हो रही है। इसलिए हे प्रभो! आप प्रसन्न हों।।२५।।

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसंघैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः।।२६।।
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमांगैः।।२७।।

अमी=वे सब; **च**=भी; **त्वाम्**=आपसे; **धृतराष्ट्रस्य**=धृतराष्ट्र के; **पुत्राः**=पुत्र; **सर्वे**=सब; **सह एव**=सहित; **अवनिपाल संघैः**=योद्धा राजाओं के समुदाय के; **भीष्मः**=भीष्मदेव; **द्रोणः**=द्रोणाचार्य; **सूतपुत्रः**=कर्ण; **तथा**=और; **असौ**=वह; **सह**=सहित; **अस्मदीयैः**=हमारे; **अपि**=भी; **योधमुख्यैः**=प्रधान योद्धा; **वक्त्राणि**=मुखों में; **ते**=आपके; **त्वरमाणाः**=शीघ्रता से; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **दंष्ट्रा करालानि**=विकराल दाँतों वाले; **भयानकानि**=अति भयंकर; **केचित्**=कुछ; **विलग्नाः**=लगे हुए; **दशनान्तरेषु**=दाँतों के बीच; **संदृश्यन्ते**=दिखाई दे रहे हैं; **चूर्णितैः**=चूर्ण हुए; **उत्तमांगैः**=सिरों सहित।

अनुवाद

वे सभी धृतराष्ट्र के पुत्र अपने पक्ष के राजाओं के साथ तथा भीष्म, द्रोण, कर्ण और हमारे पक्ष के योद्धा भी वेगपूर्वक विकराल दाँतों वाले आपके मुखों में प्रवेश कर रहे हैं। उनमें से कुछ तो चूर्ण हुए सिरों सहित आपके दाँतों के बीच लगे हुए भी दिखते हैं।।२६-२७।।

तात्पर्य

पूर्व श्लोक में श्रीभगवान् ने प्रतिज्ञा की है कि वे अर्जुन को ऐसे दृश्य दिखायेंगे जिन्हें देखना उसे हार्दिक रुचिकर होगा। अर्जुन इस समय भीष्म, द्रोण, कर्ण और धृतराष्ट्रपुत्रों आदि महारथियों सहित विपक्षी सैनिकों को और अपने दल के योद्धाओं को भी कालकवलित होते हुए देख रहा है। यह इस ओर संकेत करता है कि